नाम :- सोनी कुमारी
वर्ग :- बी॰ए॰ पार्ट III
विभाग :- संस्कृत

छन्द

संस्कृत साहित्य में छन्द का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत साहित्य में काव्यरचना गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में होती है, किन्तु अधिकांश काव्य पद्यात्मक ही है। ये पद्य या श्लोक छन्दोबद्ध है। छन्द से तात्पर्य है - लय। जिसका निर्माण एक निश्चित चरण वर्ण मात्रा, गति, यति और गण आदि के द्वारा नियोजित करके किया जाता है। छन्द के बिना संस्कृत साहित्य एक पंगुवत है इसके बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता है अतः कहा भी गया है —

"छन्दः पादौ तु वेदस्य"

अर्थात छन्द वेदरूपी पुरुष का पैर (पाद) है। अगर छन्द को हटा दिया जाए तो आन्दन (रस) ही समाप्त हो जाएगा।

⇒ छन्द के प्रकार

छन्द दो प्रकार होते हैं —

① वैदिक छन्द ② लौकिक छन्द

पुनः लौकिक छन्द दो प्रकार के हैं —

① मात्रिक छन्द ② वार्णिक छन्द

मात्रिक छन्द — इसमें छन्दों की पहचान मात्राओं की गणना करके की जाती है।

वार्णिक छन्द — इसमें पाद में वर्णों की गणना करके छन्द की पहचान की जाती है।

वार्णिक छन्द के तीन प्रकार है —

① समवृत ② अर्धसमवृत ③ विषमवृत

① समवृत = सम अर्थात समान और वृत अर्थात छन्द। इस प्रकार जिसमें छंद के चारों चरणों में वर्ण संख्या समान रहती है उसे समवृत छंद कहते। उदा० - इन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका आदि।

② अर्धसमवृत — इसमें प्रथम, तृतीया और द्वितीया तथा चतुर्थ में वर्ण संख्या समान होती है। जैसे- वियोगिनी, पुष्पिताग्रा।

③ विषमवृत — इसमे चारों चरणों में वर्णों एवं स्वरो की संख्या असमान रहती है - जैसे- उद्गाथत आदि।

⇒ छन्द निर्माण में ह्रस्व और दीर्घ वर्ण का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है अतः इसकी जानकारी आवश्यक है जो निम्न है —

सानुस्वारस्च दीर्घस्च विसर्गी च गुरु र्भवेत।
संयोगान्तातपूर्वस्च तथा पादान्तगोऽपि वा।

अर्थात — जो वर्ण अनुस्वार से युक्त हो (शंकरा), दीर्घ हो, विसर्ग (नरः) से युक्त हो, संयुक्त वर्ण से पहले हो (सुन्दर में सु) तथा चरण का अन्तिम वर्ण हो तो वह गुरु हो जाते है।

प्रत्येक पाद में मात्राओं या वर्णों की गणना की जाती है।

नाम - सोनी कुमारी
वर्ग — बी॰ए॰ पार्ट III
विभाग - संस्कृत

ह्रस्व या लघु को वर्ण को एक मात्रा वाला तथा दीर्घ या गुरु वर्ण को दो मात्रा वाला माना जाता है। ह्रस्व वर्ण को लघु तथा दीर्घ वर्ण को गुरु कहते है। इसप्रकार अ, इ, उ तथा ऋ ये लघु (ह्रस्व) स्वर है। ये स्वर जिस व्यञ्जनवर्ण में लगते है वह भी लघु कहलाते हैं। दुसरी ओर आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः — ये सभी गुरु (दीर्घ) है।

गण निर्माण

वार्णिक छन्द में प्रत्येक पाद गणों में विभक्त होता है। प्रत्येक गण में ३ वर्ण होते हैं। अर्थात तीन वर्णों के समूह को एक गण मान लिया जाता है।

" आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम् ।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम् ॥ "

अर्थात — तीन वर्णों में प्रथम वर्ण गुरु हो तो भगण, मध्य वर्ण गुरु हो तो जगण तथा अन्तिम वर्ण गुरु हो तो सगण कहा जाता है। इसी प्रकार प्रथम वर्ण लघु हो तो यगण, बीच का लघु हो तो रगण तथा अन्तिम वर्ण लघु हो तो तगण होता है। तीनों वर्ण गुरु हो तो मगण तथा तीनों वर्ण लघु हो तो नगण होता है।

लघु का चिह्न — ।
गुरु का चिह्न — ऽ

⇒ गणों की संख्या ८ है ——

① यगण (ISS) :- सूत्र में बताया गया है कि प्रथम वर्ण लघु होती यगण होता है अतः यह यगण है।

② मगण (SSS) :- इसमें सभी वर्ण गुरु है अतः मगण हुए।

③ तगण (SSI) :- इसमें अन्तमें लघु वर्ण है अतः तगण हुए।

④ रगण (SIS) :- इसमें मध्य में लघु है अतः रगण है।

⑤ जगण (ISI) :- इसमें बीच में गुरु है अतः जगण है।

⑥ भगण (SII) :- इसमें आदि में गुरु है अतः भगण है।

⑦ नगण (III) :- इसमें तीनों वर्ण लघु है अतः नगण है।

⑧ सगण (IIS) इसमें अन्त में गुरु है अतः सगण है।

एक गण निर्माण की एक अन्य विधि —

सूत्र — यमातराजभानसलगा

सूत्र के पहले आठ वर्णों में आठ गणों के नाम है, अन्तिम दो वर्ण लघु और गुरु है। जिस गण की मात्राओं का स्वरूप जानना हो उसके लिए आगे के दो अक्षरों को इस सूत्र से ले ले।

जैसे — 'मगण का स्वरूप जानने के लिए 'मा' तथा उसके आगे के दो अक्षर तारा = मातारा (SSS)।

दो सर्प एक दूसरे से लिपटे हुए हैं। भगवान शिव अपनी सभी इन्द्रियों तथा प्राणादि वायु को देह के भीतर ही इस प्रकार रोके हुए हैं कि शरीर मानो उसकी सारी इन्द्रियाँ बिल्कुल शांत हो बाहरी ज्ञान से विरत हो चुकी हैं। तथा तत्वदृष्टि से जिन्होंने अपने आप में ब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया है, वे एकाकार रूप धारण कर लिये हैं। आगे कवि कहते हैं वैसे शिव की वह ब्रह्मलीन समाधि हम सभी पाठकों की रक्षा करें।

प्रस्तुत श्लोक में महाकवि महाकवि शूद्रक के योगविद्या का बड़ा सुन्दर निदर्शन होता है।

व्याकरण :— यहाँ स्रग्धरा छन्द है। उपमा अलंकार है।
~~पर्यङ्कग्रन्थ~~ ·
संवीत — सम + वृ + क्त।
दृष्ट्या — दृश + क्तिन् (तृ० ए० व०)
शून्य-ईक्षणम — शून्यस्य ईक्षणम् (ष० तत्पु०)

श्लोक :- पातु वो नीलकण्ठस्य कण्ठः श्यामाम्बुदोपमः।
गौरीभुजलता यत्र विद्युल्लेखेव राजते ॥१॥

प्रस्तुत श्लोक में महाकवि शूद्रक मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं —

शिवजी का काले बादल जैसा कण्ठ, जिसमें पार्वती की (गौर वर्ण) भुजा रूपी लता विद्युत पंक्ति के समान शोभित होती है, आप सब की रक्षा करे ॥१॥

व्याख्या :- मंगलाचरण का यह दूसरा श्लोक सर्वोत्कृष्ट कल्पना शब्द संयोजन एवं ध्वनितत्वों के समावेश के कारण अत्युत्कृष्ट बन गया है। श्लोक की प्रथम पंक्ति में एक भगवान शिव की आदर्श व्याख्या प्रस्तुत की गयी है जो नान्दी का एक आवश्यक तत्व है। दूसरी पंक्ति में भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति व्यञ्जना की अनिवार्यता को दर्शाता है। — इस श्लोक के चार शब्द 'कण्ठ' और 'भुजलता' तथा 'श्यामाम्बुद' एवं 'विद्युल्लेखा' अर्थध्वनि की दृष्टि से अधिक मार्मिक है। पंचम अङ्क में कथाबीज का आभास हमें यहाँ ही मिल जाता है। "शिव के गले में गौरी की गोरी बाँह" से नायक चारुदत्त के प्रति नायिका वसन्तसेना का स्वाभाविक प्रेम प्रकट होता है। गौरी के द्वारा शिव के गले में बाँह डालने से गौरी की उत्कण्ठा की तरह स्वयं आगे बढ़कर नायिका वसन्तसेना की आसक्ति नायक चारुदत्त के प्रति अभिव्यक्त होती है। नीलाम्बुद शब्द से मेघाच्छन्न दिन में वसन्तसेना

नाम — सोनी कुमारी
वर्ग — बी॰ए॰ पार्ट 2
विभाग — संस्कृत

मृच्छकटिकम्

श्लोक सं॰-1 पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसंवीतजानो —
रन्तः प्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य ।
आत्मन्यात्मानमेव व्यपगतकरणं पश्यतस्तत्त्वदृष्ट्या
शम्भोर्वः पातु शून्येक्षणघटितलयब्रह्मलग्नः समाधिः ॥1॥

प्रस्तुत श्लोक महाकवि शूद्रक विरचित 'मृच्छकटिकम्' के प्रथम अंक से उद्धृत है। इसमें कवि ने भगवान शिव जी की ब्रह्मलीन समाधि का बड़ा सुन्दर वर्णन करते हुए कहते ——

अर्थ पर्यङ्क नामक योगासन में सन्धि-स्थल पर बाँधने से द्विगुणित सर्प के लपेटने से जिस (शिव) के घुटने बंधे हुए हैं, (योग बल के द्वारा) प्राण वायु को भीतर ही रोक देने से जिसकी समस्त इन्द्रियाँ (बाह्य) ज्ञान से विरत तथा संयत (रुद्ध) हो गई हैं, जिसने यथार्थ ज्ञान के द्वारा इन्द्रिय-व्यापार निरोधपूर्वक अपने भीतर आत्मा का दर्शन किया है, उस शिव की समाधि जो निराकार (ब्रह्म) के दर्शन में होने वाली एकाग्रता (लय) के कारण ब्रह्म में लगी हुई है - आप सबों की रक्षा करें।

व्याख्या — प्रस्तुत श्लोक में महाकवि शूद्रक नाटक की निर्विघ्न समाप्ति के लिए आशीर्वादात्म मंगलाचरण के रूप में भगवान शिव की स्तुति की है और सभी पाठकगणों की रक्षा की कामना की है। कवि कहते हैं कि भगवान शिव पर्यङ्क नामक आसन में इस प्रकार पालथी लगाकर दोनों पैरों को एक दूसरे के ऊपर इस प्रकार चढ़ाए हुए हैं कि जैसे मानो

का अभिसरण भी सूचित करता है।
श्वेत वर्ण विद्युल्लेखा से वसन्तसेना का पवित्र प्रेम तथा श्याम नीलाम्बुद से सांसारिक शकार आदि की मलिनता की अभिव्यक्ति होती है।

व्याकरण - प्रस्तुत श्लोक में वक्त्रावक्त्र नामक छन्द तथा लाटानुप्रास तथा रूपक अलंकार है।

नीलकण्ठस्य = नीलवर्णः कण्ठो यस्य सः (बहु॰स॰)